आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 10/12/2024; Published: 30/12/2024

कविता

मैं पिछले जन्म घास थी

- तुलसी छेत्री
मोबाइल संख्या: 9620566674
अथिति संकाय, कॉटन यूनिवर्सिटी
असम

खुरदरी बातें जब मन छिल जाती हैं

मुझे घास हो जाना अच्छा लगता है
कुचले या मसले जाने पर
तन कर खड़े हो जाना अच्छा लगता है
सड़कें मेरे गांव तक आई
या मेड़े उनकी सड़कों तक पहुंची
तर्कों और आलोचनाओं से घिर कर
मुझे घास हो जाना अच्छा लगता है

चलने, बैठने और लेटने के बीच

हरी, पीली हो कर भूरी होने तक
सारा ब्रह्माण्ड रौंदने की इच्छा लिए
मुझे घास हो जाना अच्छा लगता है
दुनियादारी का विषैला पेड़
अपेक्षाओं के नन्हे पौधों को जब ढांपने लगता है
किसी सिंदूरी शाम बालकनी में खड़े खड़े ही
मुझे घास हो जाना अच्छा लगता है।

****